

## **Regarding need to set up book stalls dedicated to Marathi literature in all the railway stations in Maharashtra.- laid**

डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) : केंद्र सरकार ने मराठी को 'शास्त्रीय भाषा' (Classical Language) का दर्जा दिया है, जो कि एक अत्यंत सराहनीय और स्वागत योग्य कदम है। मराठी 11 करोड़ से अधिक भाषाभाषियों के साथ एक प्राचीन भाषा है। संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम जैसे महान संतों से लेकर लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे जैसे साहित्यकारों तक, मराठी साहित्य की एक गौरवशाली और समृद्ध परंपरा रही है। इस साहित्य ने न केवल हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है, बल्कि समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस गौरवशाली परंपरा को आम लोगों, विशेषकर युवाओं तक पहुँचाने के लिए इसे सुलभ बनाना आवश्यक है। रेलवे स्टेशन ऐसा स्थान हैं जहाँ प्रतिदिन लाखों लोग आते-जाते हैं। अतः यह स्थान भाषा एवं साहित्य के प्रचार के लिए एक उत्तम और प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। मेरा अनुरोध है कि महाराष्ट्र के सभी प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर मराठी साहित्य को समर्पित बुक स्टॉल स्थापित करने के लिए एक नीति बनाएं। इन स्टॉलों पर संत साहित्य से लेकर आधुनिक कथा-कहानियों और कविताओं तक, हर विधा का साहित्य उपलब्ध कराया जाना चाहिए। यह कदम 'शास्त्रीय भाषा' के सम्मान को जन-जन तक पहुंचाएगा। इससे 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को भी बल मिलेगा।